वैदिककाल के आर्यों के राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन पर प्रकाश डालिए

वैदिक काल की सभ्यता भारत में आर्यों की प्राचीन सभ्यता थी वैदिककाल आर्यों के इतिहास के उस युग को कहते है जब वेदों की रचना की वैदिक कालीन सभ्यता के ज्ञान का मुख्य आधार वैदिक साहित्य है जिनमें वैदिक ग्रंथ पुराणों अनुश्रुतियों का प्रमुख स्थान है पुराणों के अनुसार यह काल त्रेता के लगभग दो हजार वर्ष पूर्व माना जाता है वैदिक काल दो भागों में विभक्त किया जाता है ऋग्वेदकाल और उत्तरवेदकाल ऋग्वेद सबसे प्राचीन है इसके बाद ही अन्य वैदिक ग्रंथों का जन्म हुआ अब हम ऋग्वैदिक सभ्यता के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करेंगे ?

ऋग्वैदिक राजनीतिक व्यवस्था —

ग्रामसंगठन ⟶ ऋग्वैदिक काल की राजनीतिक व्यवस्था का मुख्य आधार कुटुम्ब था जो पैतृक होता था कुटुम्ब का प्रधान पिता अथवा कोई बड़ा-बूढ़ा होता था जो कुटुम्ब के अन्य सदस्यों पर नियंत्रण रखते थे वह कुलपति कहलाता था कई कुटुम्बों को मिलाकर एक ग्राम बनता था ग्राम के सभी कुलपति मिलकर एक प्रधान को चुनते थे वही ग्राम का प्रधान ग्रामीणि कहलाता था ग्राम की रक्षा का भार उसी पर रहता था। ग्रामपंचायतों की सहायता से ग्राम के सभी कार्य शिक्षा, सड़क, तालाब छोटे-छोटे झगड़ों का निर्णय कई गावों को मिलाकर एक विश बनता था कुछ विशों को

7 Thursday

मिलाकर "जन" बनता था जन का रक्षक अधिप कहलाता था जो प्रायः राजा स्वयं हुआ करता था

राजा → ऋग्वेद में अनेक राजाओं का उल्लेख मिलता है इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि राजनीतिक संगठन राजतन्त्रात्मक था राज्य का प्रधान राजा कहलाता था राजा का पद आनुवंशिक था राजा के मरने के बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र गद्दी पर बैठता था वह राजमहल में रहता था अनेक पदाधिकारी हुआ करते थे राजा की प्रत्येक आज्ञा का पालन जनता के लिए अनिवार्य था

8 Friday

राजा का कर्तव्य → प्रजा की रक्षा, शत्रुओं से युद्ध, राज्य में शान्ति रखना शान्तिकाल में यज्ञ आदि कार्यों का अनुष्ठान राजा का प्रमुख कर्तव्य था राजा अपनी प्रजा के आचरण पर दृष्टि रखता था इनके लिए गुप्तचर विभाग था जो राजा को गुप्त आधार पर सूचना देता था आचरण भ्रष्ट लोगों को सजा दिया जाता था'

पदाधिकारी — राजा की सहायता के लिए बहुत से पदाधिकारी थे जिनमें पुरोहित, ग्रामणी, सेनानी प्रधान था' पुरोहित का स्थान सबसे ऊँचा था उसका पद प्रायः

अनुयायी होता था पुरोहित राजा के धर्मगुरु को
महामंत्री कहा जाता होता था इसे राजा के साथ रणक्षेत्र में
जाना पड़ता था राजा का दूसरा प्रमुख पदाधिकारी
सेनानी था वह सेना का संचालन करता था उसकी
नियुक्ति राजा स्वयं करता था और जहाँ ने राजा
आवश्यकता नहीं होती थी उसमें सेनानी ही सेना का प्रमुख
ग्राम का शासन प्रबन्ध की जिम्मेदारी ग्रामणी पर होता था।

न्याय व्यवस्था → राजा अपनी सहायकों की मदद
से न्याय व्यवस्था करता था न्याय कार्य में पुरोहित
से बड़ी सहायता मिलती थी जिन अपराधों का उल्लेख
ऋग्वेद में मिलता है उसमें चोरी, डकैती, सेंध लगाना, अपराधियों
रात में पशुओं की चोरी खुब होती थी

को दण्ड की व्यवस्था थी।

युद्ध → युद्ध में सभी लोगों को भाग लेना पड़ता
था। साधारण लोग पैदल युद्ध करते थे लेकिन राजा
और क्षत्रिय लोग ~~सको~~ रथों से युद्ध करते थे युद्ध
में आत्मरक्षा के लिए कवच, आक्रमण करने का प्रधान
शस्त्र धनुष-बाण भाला फरसा तलवार, का प्रयोग
किया जाता था युद्ध प्रायः नदियों के तट पर कुआ करता था

सभा और समिति → राजा अपने राज्य का सबसे शक्तिशाली
व्यक्ति होता था परन्तु वह निरंकुश नहीं होता था प्रजा
का आदर करता था सभा
की इच्छाओं तकनीक का सदैव ~~होती थी - सभा समिति~~
~~साधारण व्यक्तियों का परिषद होती~~

11 Monday

सभा वर्तमान समय के ~~सुप्रीम~~ कोर्ट
समुद्रायान की भांति सभा होती थी।
इंग्लैंड की लार्ड सभा (House of Lord) अथवा
अमेरिका के सीनेट (Senate) के समान थी
लेकिन इनमें स्त्रियों को भाग लेने का अधिकार नहीं
था।

ऋग्वैदिक सामाजिक व्यवस्था → आर्यों की सामाजिक व्यवस्था
संगठित थी सामाजिक जीवन सरल और साधारण था
जो लोग गोरे थे वे आर्य और जो काले थे वे
अनार्य थे। आर्य अपने कर्मों अनुसार कई वर्णों में
विभक्त थे, पढ़ने तथा यज्ञ करने वाले — ब्राह्मण
युद्ध तथा शासन करने वाले — क्षत्रिय
कृषि तथा व्यापार करने वाले — वैश्य
सेवा के कार्य करने वाले — शूद्र कहलाते थे

12 Tuesday

आश्रम व्यवस्था → ऋग्वैदिक काल में आश्रम व्यवस्था
थी जिनमें जीवन के चार भाग किये गये थे. ब्रह्मचर्य
गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा सन्यास.
इनका पालन तीन वर्णों को करना पड़ता था ब्राह्मण,
क्षत्रिय, वैश्य को।

परिवार → समाज में परिवार सबसे छोटी इकाई थी
पितृप्रधान परिवार था। संयुक्त परिवार की प्रथा
थी, इस प्रकार परिवार में पिता का स्थान सर्वोपरि

स्त्रियों का स्थान → इस काल में पत्नि का
महत्व था वह गृहिणी कहलाती थी घर के

अन्दर समस्त कार्य उन्हीं को करना पड़ता था। स्त्री धार्मिक कार्यों में पति के साथ रहती थी

विवाह प्रथा → विवाह को धार्मिक संस्कार मानते थे निकट के सम्बन्धी आपस में विवाह करते थे दहेज प्रथा नहीं थी ब्रह्म विवाह का सबसे अधिक प्रचलन था।

वस्त्र आभूषण → आर्य लोग सुन्दर वस्त्र तथा आभूषण पहनते थे। सूती, ऊनी और रेशमी वस्त्र पहनते थे स्त्रियां, हार, कंगन कुण्डल कड़े पहनती थी।

शिक्षा → इस काल में शिक्षा मौखिक होती थी शिक्षा का उद्देश्य, बुद्धि और आत्म शुद्धि के लिए था।

भोजन → आर्यों का मुख्य भोजन गेहूं जौ था

दूध था तरह-तरह के सब्जी भी खाते थे कुछ पेय पदार्थों का, कुछ लोग मांसाहारी भी थे लेकिन ब्राह्मण इसे घृणा करते थे प्रयोग करते थे लेकिन प्रेमी थे इस काल में नृत्य और संगीत के भी प्रेमी थे इस काल में नृत्य और संगीत से या तो जलाते थे या मृतक क्रिया दो प्रकार से या तो जलाते थे या जमीन में गाड़ने की प्रथा थी

ऋग्वैदिक आर्थिक व्यवस्था → उस समय व्यापारियों को पणि कहा जाता था व्यापार जल और स्थल दोनों मार्ग से होता था प्रारम्भ में वस्तु विनिमय आर्य लगा व्याज देने में सोना चाँदी का व्यवहार होने लगा व्याज देने की प्रथा प्रचलित थी

2019 FEBRUARY

March 2019

15 Friday

कला → आर्यों को विभिन्न कलाओं में रुचि थी। वे गृहनिर्माण कला, कताई, बुनाई, धातु कला, काष्ठकला में निपुण थे।

धार्मिक अवस्था → उनका धर्म बहुत सरल और सादा था। वे प्रकृति की पूजा करते थे। विश्वास था कि सूर्य, चन्द्र, वायु, मेघ आदि में ईश्वर निवास करते हैं इसी कारण इनकी उपासना करते थे। पितरों के पूजा में विश्वास रखते थे। यज्ञ में अन्न, दूध, घी आदि देवताओं को चढ़ाते थे। आर्यों में पुनर्जन्म की कल्पना नहीं होती थी उनका विश्वास था कि मृत्यु के उपरान्त जीवन का अन्त नहीं होता है।

16 Saturday